असम की लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य और लोकगीत, एक समीक्षात्मक अध्ययन

दीपक कुमार गुप्ता
शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी

१) प्रस्तावना :-

'लोकसंस्कृति' से आशय है,- □ किसी व्यक्ति वर्ग, जाती, समाज, राज्य या राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रूचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती है |□

असमिया संस्कृति मुख्यतः आर्य-संस्कृति ही है परन्तु इसके निर्माण में आर्येतर जातियों का अपूर्व योगदान है जिनमे- आष्ट्रिक, द्रविड़ और तिब्बती-वर्मी जातियाँ विशेष महत्व की अधिकारिणी है | असम में मंगोलीय कबीलों की भरमार है | जैसे- नागा, मिकिर, मिरी, राभा, मेच, गारो, चुतीया, कछारी, बोड़ो, मारन या मराक, आहोम आदि मूलतः मंगोलीय ही हैं | इनमें चीनी परिवार के अहोमों का असम के राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव रहा है |

२) अध्ययन का महत्व :-

किसी जाती के लोक-संस्कृति का स्वरूप उसके लोक-साहित्य में उभर आता है | जन-मानस के विश्वाश, संस्कार, परम्पराएं, चिंतन-प्रक्रियाएँ लोक-साहित्य के माध्यम से सस्वर हो उठती हैं | असमिया लोक-साहित्य असम के जन-जीवन की सांस्कृतिक झांकी है | आज भी असम में विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रथाएं पूर्ववत हैं, जिनकी समुचित झलक हमें इसके लोक-साहित्य में मिलती है |

लोक-साहित्य लोक-मानस की अभिव्यक्ति है | इसके माध्यम से सामान्य जन के हृदयोद्गार व्यक्त होने के करण इसे जन-जीवन का दर्पण कहा जा सकता है | लोक-साहित्य के 'लोक' शब्द से केवल 'जनपद' या 'ग्राम्य' का द्योतन नहीं होता, बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई वह समुचि जनता है, जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं | पोथियों में लिपिबद्ध न होने के करण यह साहित्य मौखिक होता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रचलित होता रहता है | यह मनोरंजक, शिक्षाप्रद और व्याकरणिक नियमों से मुक्त तथा व्यावहारिक होती हैं | यथा,-

 लाउ खा, बेडेना खा, बछरे- बछरे बाढि जा |

मॉँर सरू, बापेर सरू, तई हबी बर गरु |

३) अध्ययन का शीर्षक :-

अध्ययन विषय का शीर्षक है,- असम की लोकसंस्कृति , लोकसाहित्य और लोकगीत, एक समीक्षात्मक अध्ययन |

४) अध्ययन का विषय :-

अध्ययन के विषय के अन्तर्गत असमिया समाज, संस्कृति, साहित्य और लोक मानस में प्रचलित गीतों का विशेष चित्रण किया गया है |

५) अध्ययन में व्यवहृत पद्धति एवं उपाय :-

प्रस्तुत अध्ययन विषय के अध्ययन की पद्धति विश्लेश्नातामक है | असम की लोकसंस्कृति , असम के लोक साहित्य और असमिया लोकगीतों के परिप्रेक्ष्य में प्रकाशित काव्य कृतियों तथा उनके जीवन, व्यक्तित्व और रहन-सहन के तरीकों के ऊपर लिखी गयी आलोचनात्मक रचनाओं और इतिहास ग्रंथों का सहारा लिया गया है |

६) विश्लेषण एवं निर्वचन :-

असमिया लोक-साहित्य का भंडार बहुसंख्यक अज्ञात रचयिताओं द्वारा समय-समय पर लिखा गया है तथा जो रचनायें गायी भी जाती थीं और ये रचनायें वविध विधाओं के आलोक से आलोकित भी हैं |

अध्ययन की सुविधा के लिए समस्त लोक-विरचित साहित्य को निम्नांकित विधाओं में वर्गीकृत किया गया है,_

क) लोक-गीत

ख) लोक-गाथा

ग) लोक-कथा

घ) लोक-नाट्य

ङ) प्रकीर्ण-साहित्य

च) मंत्र-साहित्य

क) लोक-गीत:-

जन-जीवन के ह्रदय मे उमडती हुई प्रबल गहन भावनाएं तथा उसकी स्वाभाविक और संगीतात्मक अभिव्यक्ति ही लोक-गीत कहलाती है | डॉ. सत्येन्द्र ने लोक-गीत की परिभाषा इस प्रकार की है,- " वह गीत जो लोक-मानस की अभिव्यक्ति हो अथवा जिसमें लोकमानस भी हो लोक-गीत के अन्तर्गत आयेगा |"

डॉ. सदाशिव कृष्ण फकडे की परिभाषा,- " शाष्त्रीय नियमों को विशेष परवाह न करके संन्य लोक-व्यव्हार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनंद की तरंग में जो छंदोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है, वही लोक-गीत है |"

अतः कहा जा सकता है कि, लोकमानस के ह्रदय की भावनाओं की स्वाभाविक तथा स्वतः स्फुट लयात्मक अभिव्यक्ति ही लोक-गीत है जिसमें लोक-व्यक्तित्व सामूहिक व्यक्तिव में विलीन हो जाता है | इसीलिए यह जनसमूह की धरोहर बन जाता है और अपनी सहजबोधात्मकता, रसात्मकता, मधुरिमा आदि गुणों के करण ही सभी लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित करती है |

लोक-गीत के प्रकार :- लोक-गीतों के विविध प्रकार है | यथा,-

१) संस्कार विषयक गीत:- भारतीय धर्म्शाश्त्रियों के अनुसार षोडश (सोलह प्रकार के) संस्कारों का विधान है | परन्तु आजकल असमिया समाज में जन्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चुडाकरण (मुंडन), गौना, विवाह, मृत्यु आदि ही प्रधान संस्कार रह गए हैं | उदहारण,-

अन्नप्राशन,- " हे रे छावार मामा, भाबिया करिस कि ?
अन्न खुवाब लगे, साजिया आय रे तुई |"

२) पूजा और धर्म विषयक लोक-गीत :- अम्बुवाची, दुर्गा तथा शक्ति माता कि पूजा, शीतला माता कि पूजा आदि विभिन्न व्रत तथा मांगलिक अनुष्ठान इसी के द्योतक हैं | जैसे,-

क) व्रत-पर्व-त्यौहार के गीत :- जैसे दुर्गा-पूजा, मनसा-पूजा, आठला-पूजा आदि | उदाहरणार्थ,-

दुर्गा-पूजा,- ▯ ए दुर्गा तारिणी ए दुर्गति नाशिनी |
दुर्गतिक नाश करा भैरव भवानी ||
ए दुर्गा तारिणी ए शक्ति सनातनी |
शरणागतके रक्षा करा नारायणी || ▯

ख) मांगलिक-गीत :- आइ-नाम या शीतला-नाम (चेचक-देवी के गीत), आई-सवाह व आसन स्थापन, लक्ष्मी-आदरण, सुवाचानी नाम, अपेचरा-सवाह इत्यादि |

ग) दार्शनिक- अध्यात्मिक-गीत :- दार्शनिक- अध्यात्मिक-गीतों के भी कई प्रकार हैं| जैसे,-

अ) देह-विचार के गीत

आ) टोकरी गीत

इ) जिकिर आदि |

जिकिर का एक उदहारण द्रष्टव्य है,-

▯ कोराणे पुराणे एक के कैछे
बुजिबा महंत लोक,
एइ दुनियात आछेदुई वेशे
मुर्चिंदे बुजाब तोक | ▯

घ) भक्ति विषयक गीत :- भक्ति विषयक गीतों में सदाशिव का नाम, रामायण के गीत, महाभारत के गीत, जगन्नाथ के गीत आदि आते हैं | उदाहरणार्थ,-

अ) ईष्ट देव विषयक गीत :- जैसे,-

▯ सरयू बनते राजा दशरथे
हाते धनुशर धरी |

शब्द अनुसारे मृग मारी फुरे

शब्दभेदी शर एरि ||

आ) गुरु विषयक गीत :- शंकरदेव विरचित एक गीत का उदहारण द्रष्टव्य है,-

 जय जय बरदोवा बैकुंठ दुतय ,

सेहि स्थाने निजगुरु, भैलंत उदय |

३) ऋतु विषयक गीत :- ऋतु विषयक गीतों में जैसे,- भाद्र के गीत, मच्छर भागाने के गीत, बारहमासा, होलिगीत, बिहुगीत तथा बनगीत आदि आते हैं | उदहारण स्वरूप,-

हुसरि गीत,- हुसरि बाई ओ दलौ चराइ |

आमि जे आछो हुसरी गाइ ||

४) कर्म-विषयक लोक-गीत :- कर्म-विषयक लोक-गीतों मे प्रधानतः निम्न गीत आते हैं | जैसे,-

क) चरवाही गीत

ख) नाविक के गीत

ग) हल जोतने के गीत

घ) बंसी डालने के गीत

ङ) ईख पेरने के गीत

च) पेड़ काटने के गीत

छ) धान कुटने के गीत इत्यादि |

उदाहरणार्थ,

नाविक के गीत,- बाछा नंदेर दुलाल |

एत राति धेनु छारे कार घरर छावाल ||

सोणर थालते मोर पचिछखन व्यंजन |

कौन राति आहि कृष्ण करिब भोजन ||

बंसी डालने के गीत :- आनर बरशी (बंसी) तिता |

मोर बरशी मिठा ||

५) राजनीति विषयक लोकगीत :- राजनीति विषयक लोकगीतों में निम्न गीत आते हैं | जैसे,- कंपनी शासन विषयक गीत, स्वतंत्रता विषयक गीत, महात्मा गाँधी विषयक गीत तथा चीनी आक्रमण विषयक गीत | उदाहरणार्थ,-

 शिवसागर शिवदौल
चीनी युद्ध लागी गल,
तोवान्गलै जाबलै
पाहारेदी रास्ता हल |

६) निष्कर्ष :-

असम की लोकसंस्कृति , लोकसाहित्य और लोकगीतों के समीक्षात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट पता चलता है कि असमिया संस्कृति एक महान और व्यापक ससंस्कृति है तथा इसकी संस्कृति मे भिन्न-भिन्न जातियों की भावनाएं, उत्साह, और उसकी क्रियाशीलता समाहित है | यह एक है अखंड है और प्राचीन काल से आज तक अपनी लयात्मक प्रवाह मे प्रवाहित है | आज भी यहाँ इन महान जातियों कि दैनंदिन जीवनचर्या का अंग उनके लोकगीत और उसमे निहित भावनाएं यथा प्रचलित हैं |

आधार ग्रन्थ :-

१) रायचौधुरी प्रो. भूपेंद्र – असमिया-साहित्य की भूमिका
भारती प्रकाशन, रिहाबरी, गुवाहाटी
२) रायचौधुरी प्रो. भूपेंद्र – असमिया साहित्य निकष
विश्विद्यालय प्रकाशन विभाग, गुवाहाटी
३) महंत चित्र – असमिया साहित्य का इतिहास .